आओ, ख़ुद देख लो 17

सच्चा शागिर्द

sachchā shāgird

A True Disciple

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 17]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of torstenbreswald https://pixabay.com/vectors/chain-broken-chain-line-art-6202299/; ractapopulous https://pixabay.com/illustrations/background-scrapbooking-texture-2037172/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

शागिर्द को ज़िंदगी का नूर हासिल है 2

शागिर्द अपने गुनाहों में नहीं मरेगा 5

शागिर्द जानता है कि नूर कहाँ से है 6

शागिर्द गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद है 8

शागिर्द अबदी मौत नहीं देखेगा 11

इंजील, यूहन्ना 8:12-59 13

झोंपड़ियों की ईद थी। इस ईद पर लोग फ़सलों की ख़ुशी मनाते थे, यह कि ख़ुदा ने बारिश बरसाकर फ़सलें पैदा की हैं। साथ साथ वह याद करते थे कि एक दिन अल-मसीह आकर सब कुछ बहाल करेगा। उस वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के नीचे से पानी बह निकलेगा। इसलिए ईसा मसीह ने इसी ईद पर खड़े होकर फ़रमाया था कि जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। तब उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी। इससे वह साफ़ कह रहा था कि मैं ही अल-मसीह हूँ, और मुझ पर ईमान लाकर तुम्हें अबदी ज़िंदगी मिलेगी।

► **जिसने अबदी ज़िंदगी का पानी पी लिया है वह क्या है?**

वह ईसा मसीह का शागिर्द है। लेकिन शागिर्द होने का क्या मतलब है? ईसा मसीह को झूठे शागिर्दों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह सच्चे शागिर्द चाहता है। यही वजह है कि अब उसने सच्चे शागिर्द का मज़मून छेड़ा। पहली बात,

शागिर्द को ज़िंदगी का नूर हासिल है

झोंपड़ियों की ईद का एक निशान पानी था। दूसरा निशान रौशनी थी। रात के वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में बड़े बड़े चराग़दान जलाए जाते थे। इनकी रौशनी में यरूशलम शहर का कोना कोना चमकता-दमकता था। ईद के दौरान ईमानदार पूरी रात बैतुल-मुक़द्दस में ख़ुशी मनाते थे।

► **चराग़दानों के पीछे क्या ख़याल था?**

रौशनी ख़ुदा के नूर की तरफ़ इशारा है। जो ख़ुदा के नूर में चलता है वह सही राह पकड़ लेता है। न सिर्फ़ यह बल्कि पानी की तरह यह रौशनी उस नूर की तरफ़ इशारा थी जो अल-मसीह लाएगा। यों ज़करियाह नबी ने पेशगोई की थी,

> न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी रौशनी होगी। (ज़करियाह 14:7)

मतलब है अल-मसीह के आने पर रात भी रौशन होगी। क्योंकि वह नूर का सरचश्मा होगा।

इस ईद पर ईसा मसीह कह चुका था कि मैं ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। अब उसने खड़े होकर फ़रमाया,

> दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा। (यूहन्ना 8:12)

► **कौन दुनिया का नूर है?**

ईसा मसीह।

► **ईसा मसीह ने इस ईद पर यह बात क्यों फ़रमाई?**

पानी की तरह नूर अल-मसीह का निशान है।

► **दुनिया का यह नूर हमें क्या दिलाता है?**

- नूर रास्ते को रौशन कर देता है। तब हम दुनिया की तारीकी में नहीं चलेंगे। हम नजात के रास्ते पर चलेंगे।
- नूर ज़िंदगी दिलाता है। रौशनी के बग़ैर पौधा मुरझा जाता है। रौशनी के बग़ैर इनसान भी आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो जाता है। इसी तरह नूर हमें रूहानी ज़िंदगी दिलाता है, हमें ठीक मनज़िल तक पहुँचाता है, हमें अबदी ज़िंदगी दिलाता है।

एक दिन का ज़िक्र है कि एक बीज एक सूखे हुए कुएँ में गिर गया। जहाँ गिरा वहाँ तक सूरज की किरणें नहीं पहुँचती थीं। फिर भी बीज से नाज़ुक-सा पौधा फूट निकला जो आहिस्ता आहिस्ता कुएँ के मुँह तक बढ़ने लगा। आम तौर पर इस क़िस्म का पौधा सिर्फ़ दो-चार इंच लंबा हो जाता है। लेकिन रौशनी को ढूँडते ढूँडते यह पौधा सौ फ़ुट से ज़्यादा लंबा हो गया। आख़िरकार वह कुएँ के मुँह और सूरज की किरणों तक पहुँच गया।

► **इस पौधे को पूरी रौशनी और ज़िंदगी क्यों मिली?**

इसलिए कि वह रौशनी के पीछे पड़ा रहा। नजात का एक ही रास्ता है : उस नूर के पीछे चलना जो ईसा मसीह है।

- ► **क्या हम ऐसी शिद्दत से नूर के पीछे पड़ गए हैं?**

ईसा मसीह का यह दावा सुनकर सुननेवाले एतराज़ करने लगे, “आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।”

यह एतराज़ पहले भी किया जा चुका था (देखिए बाब 5)। उस वक़्त ईसा मसीह ने तफ़सील से इसका जवाब दिया था। इस मौक़े पर उसने यह फ़रमाना काफ़ी समझा कि मैं और मेरा बाप दोनों इसके मोतबर गवाह हैं। मसला मैं नहीं हूँ बल्कि तुम। उसने फ़रमाया,

> मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। (यूहन्ना 8:14)

- ► **मसला क्या था?**

  जब सूरज की किरणें हम पर पड़ती हैं तो हम जान लेते हैं कि यह सूरज से निकली हुई हैं। हम यह भी जान लेते हैं कि इनसे ज़मीन रौशन होकर फल लाती है। इलाही सूरज का नूर दुनिया में आया था मगर इन मुख़ालिफ़ों के दिल रौशन नहीं हुए थे न वह रूहानी फल लाए थे। अफ़सोस!

ईसा मसीह उन्हें आगाह करना चाहता था, इसलिए उसने फ़रमाया कि सिर्फ़ सच्चे शागिर्द को ज़िंदगी का नूर हासिल है। दूसरे,

शागिर्द अपने गुनाहों में नहीं मरेगा

उसने फ़रमाया,

> मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाह में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते। (यूहन्ना 8:21)

अकसर लोग शिद्दत से अल-मसीह का इंतज़ार करेंगे, मगर बेफ़ायदा। वह अपने गुनाहों में मर जाएँगे।

► **किस चीज़ में मर जाएँगे?**

अपने गुनाहों में।

► **क्यों?**

ईसा मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी ताकि हमारे गुनाह मिट जाएँ। जो उसके पीछे हो ले उसके गुनाह मिट गए हैं। लेकिन जो उसे क़बूल न करे उसके गुनाह हमेशा तक रहेंगे। इसलिए वह अपने गुनाहों में मर जाएगा।

► **जो अपने गुनाह में मर जाता है क्या उसे जन्नत की उम्मीद है?**

नहीं। गुनाह इनसान को ख़ुदा से दूर रख देता है। सिर्फ़ ईसा मसीह के पाक नूर में रहने से नजात मिलेगी। उसी में रहकर हमारे गुनाह दूर हो जाते हैं। कोई और हल नहीं।

► **मेरे दोस्त, क्या आपको नजात का यक़ीन है?**

बहुत-सारे लोग नजात को ढूँडते ढूँडते हलाक हो रहे हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह मसीह के नूर में नहीं आए हैं। ऐसे लोगों को ईसा मसीह फ़रमाता है कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते। सिर्फ़ सच्चा शागिर्द अपने गुनाहों में नहीं मरेगा। लेकिन सच्चे शागिर्द का एक तीसरा निशान है।

शागिर्द जानता है कि नूर कहाँ से है

सुननेवालों ने पूछा कि आप कौन हैं?

उसने फ़रमाया,

> मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ।
> (यूहन्ना 8:25)

► **क्या मतलब है?**

मैं अपने काम और कलाम से तुम पर ज़ाहिर हुआ हूँ, फिर भी तुम ईमान नहीं लाए। ईसा मसीह जानता था कि तू तू मैं मैं करने से बात नहीं बनेगी। जो लोग ईमान लाना नहीं चाहते उन्हें मनवाना बेकार है। फिर उसने एक बात फ़रमाई जो समझने में मुश्किल है,

> जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ। (यूहन्ना 8:28)

► **इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाने का क्या मतलब है?**

इब्ने-आदम से मुराद ईसा मसीह है। उसके मुख़ालिफ़ उसे ऊँचे पर यानी सलीब पर चढ़ाएँगे। लेकिन वह मुरदों में नहीं रहेगा। वह जी उठकर आसमान पर उठा लिया जाएगा और एक दिन दुनिया की अदालत करने के लिए लौटेगा। उस वक़्त सब जान लेंगे कि वह कौन है।

- ► **वह क्या जान लेंगे?**

मसीह फ़रमाता है, वह जान लेंगे कि मैं वही हूँ।

- ► **इसका क्या मतलब है?**

जब ख़ुदा ने मूसा नबी को हिदायत दी कि वह इसराईलियों को मिसर से फ़लस्तीन ले जाए तो मूसा ने पूछा कि मैं क्या कहूँ जब वह कहेंगे कि किसने तुझे भेज दिया है, उसका नाम क्या है? ख़ुदा ने जवाब दिया,

> मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' (तौरेत, ख़ुरूज 3:14)

इसी तरह ख़ुदा ने यसायाह नबी के वसीले से फ़रमाया था,

> ऐ इसराईली क़ौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे ख़ादिम हो जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं ही हूँ। (यसायाह 43:10)

- ► **इसराईल क्या पहचान ले?**

  कि मैं ही हूँ।

- ► **क्यों?**

  हर मख़लूक़ के पीछे वही है। उसके पीछे या ऊपर कुछ नहीं है। वह है इसी लिए हम हैं। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मैं ही हूँ।

- ► **इससे वह क्या कहना चाहता था?**

  मैं जो फ़रज़ंद हूँ ख़ुदा बाप से भेजा गया हूँ, इसलिए मैं ही हूँ। ख़ुदा बाप सूरज है, मैं उसकी रौशनी हूँ। इसलिए मैं सिर्फ़ वह कुछ करता हूँ जो ख़ुदा बाप की मरज़ी है। यह एक बहुत अज़ीम बात है जो हममें से कोई भी अपने बारे में नहीं कह सकता।

उसके मुख़ालिफ़ सोच-बिचार में पड़ गए कि क्या यह कुफ़र नहीं है? लेकिन बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए। सच्चा शागिर्द जानता है कि नूर कहाँ से है। वह जानता है कि वह ‘मैं हूँ’ है। सच्चे शागिर्द का एक चौथा निशान :

शागिर्द गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद है

उसने फ़रमाया,

> अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी। (यूहन्ना 8:31-32)

► **सच्चा शागिर्द कौन है?**

वह जो मसीह की तालीम के ताबे रहेगा।

► **ताबे रहने का क्या मतलब है?**

यह कि शागिर्द उसकी हुकूमत के तहत हो। कि नूर की किरणें दिल का कोना कोना रौशन करें।

► **सच्चा शागिर्द क्या जान लेगा?**

सच्चाई को।

► **सो सच्चाई को जानने का पहला क़दम क्या है?**

उसका पहला क़दम नूर के ताबे हो जाना है। पहले मुझे यह क़बूल करना है कि ईसा मसीह मेरा आक़ा, मेरा नूर है। तब ही मैं सच्चाई को जान लूँगा। इसके उलट नहीं हो सकता। पहले नूर मेरी ज़िंदगी को रौशन करे, तब ही मैं सच्चाई को जान सकता हूँ।

► **सच्चाई को जान लेने के बाद क्या नतीजा निकलेगा?**

सच्चाई सच्चे शागिर्द को आज़ाद कर देगी।

► **लेकिन सच्चाई क्या है?**

सच्चाई ख़ुद ईसा मसीह है जिसमें ख़ुदा बाप ज़ाहिर हुआ है। वही हमें आज़ाद करेगा (देखिए यूहन्ना 8:36)।

► **सच्चाई किस चीज़ से आज़ाद करेगी?**

ग़ुलामी से।

यहूदियों ने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे?” यहूदी तो इस पर बहुत फ़ख्र करते थे कि हम इब्राहीम की आज़ाद औलाद हैं। गो रोमी हम पर हुकूमत करें तो भी हमारी फ़ितरत आज़ाद है।

लेकिन यहाँ ईसा मसीह हक़ीक़ी आज़ादी की बात कर रहा था—रूहानी आज़ादी की बात। उसने फ़रमाया,

> जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम है।
> (यूहन्ना 8:34)

- ► **कौन रूहानी ग़ुलाम होता है?**

  जो भी गुनाह करता है। क्योंकि वह गुनाह का ग़ुलाम है।

- ► **क्या कोई इनसान है जो गुनाह नहीं करता?**

  एक भी नहीं। इस दुनिया में सिर्फ़ ईसा मसीह बेगुनाह था। कोई भी इनसान नहीं है जो अपनी ही ताक़त से गुनाह से दूर रह सके। हम सब गुनाहगार हैं। इसलिए हम सबके सब गुनाह के ग़ुलाम हैं। सिर्फ़ एक है जो हमें आज़ाद कर सकता है : ईसा मसीह। ईसा मसीह दुनिया का नूर है। उसकी पाक रौशनी में इनसान अपनी किसी भी चीज़ पर फ़ख्र नहीं कर सकता। हर चीज़ जिस पर हम फ़ख्र करते हैं इस रौशनी में नाक़िस साबित होती है।

► **तो फिर हम किस तरह गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो सकते हैं?**

दुनिया के नूर से जो इस दुनिया में नाज़िल हुआ ताकि इनसान को गुनाह से आज़ाद करे।

► **आज़ाद हो जाने के लिए क्या ज़रूरी है?**

ज़रूरी है कि उसका कलाम हमारे अंदर बसे। उसका नूर हमारे तारीक दिलों को रौशन करे। यही उसके ताबे रहने का मतलब है। यों ही सच्चा शागिर्द गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाता है। ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ रौशन नहीं हुए थे। उनका हक़ीक़ी बाप इब्राहीम नहीं बल्कि इबलीस था जिसने उन्हें तारीकी की ज़ंजीरों में जकड़ लिया था।

सच्चे शागिर्द के बारे में एक आख़िरी बात,

शागिर्द अबदी मौत नहीं देखेगा

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा। (यूहन्ना 8:51)

उसके मुख़ालिफ़ नाराज़ हुए। उन्होंने पूछा कि यह किस तरह हो सकता है? “क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको क्या समझते हो?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मसरूर हुआ। (यूहन्ना 8:56)

► **उसने ख़ुशी क्यों मनाई?**

इब्राहीम नबी था। इसलिए उसने देखा कि एक आनेवाला है जो मुझसे बढ़कर है। दुनिया का नूर आनेवाला है जो इनसान को गुनाह की ग़ुलामी से नजात देगा।

यहूदियों ने एतराज़ किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा है?” ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’। (यूहन्ना 8:58)

यह बात यहूदी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वह उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे।

► **क्यों?**

अब ईसा मसीह ने अपने बारे में साफ़ साफ़ कहा था कि ‘मैं हूँ।’ न सिर्फ़ मैं इब्राहीम से पहले था बल्कि मैं इब्राहीम से पहले हूँ। मतलब है अज़ल से हूँ। मैं इलाही सूरज का नूर हूँ। मैं वह हूँ जो इस दुनिया

में नाज़िल हुआ ताकि तुम्हें गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद करे। यह यहूदियों की नज़र में कुफ़र था।

मेरे अज़ीज़, बहुत-से लोग यह रूहानी हक़ीक़त क़बूल नहीं कर सकते। उनके नज़दीक ईसा मसीह अच्छा इनसान और अज़ीम नबी था। लेकिन वह यह क़बूल नहीं कर सकते कि वह दुनिया का नूर है, कि वह 'मैं हूँ' यानी ख़ुदा का फ़रज़ंद है। लेकिन ऐसे लोगों से मैं एक ही सवाल पूछना चाहता हूँ,

► **आप किस तरह गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाएँगे?**
उसी के पास यह इख़्तियार है, वही पूरी तरह पाक है, वही हमारे गुनाहों को मिटाकर हमें जन्नत में दाख़िल होने के क़ाबिल बना सकता है। कोई और वसीला नहीं है।

इंजील, यूहन्ना 8:12-59

फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ, "दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।"

फ़रीसियों ने एतराज़ किया, "आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।"

ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। तुम इनसानी सोच के मुताबिक़ लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। और अगर फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही मोतबर है। मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।”

उन्होंने पूछा, “आपका बाप कहाँ है?” ईसा ने जवाब दिया, “तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी जानते।”

ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस जगह के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हदिया डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था।

एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, “मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाह में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते।”

यहूदियों ने पूछा, “क्या वह ख़ुदकुशी करना चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते’?”

ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम नीचे से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। मैं तुमको बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यक़ीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।”

उन्होंने सवाल किया, “आप कौन हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैंने उससे सुना है।”

सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र कर रहा है। चुनाँचे उसने कहा, “जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया है। और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं

छोड़ा, क्योंकि मैं हर वक़्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता है।”

यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

जो यहूदी उसका यक़ीन करते थे ईसा अब उनसे हमकलाम हुआ, “अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी।”

उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम है। ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। मैं तुमको वही कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से सुना है।”

उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।” ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर

चलते। इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई है जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क़िस्म का काम न किया। नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”